Rudrashtakam by Tulasidasa)

# श्रीरुद्राष्टकं तुलसीदासकृतम्

## Document Information

Text title : rudrAShTakaM (tulasIdAsa)

File name : rudra8.itx

Category : aShTaka, shiva

Location : doc_shiva

Transliterated by : Girish Beeharry

Proofread by : Girish Beeharry, Gadi Manoj, NA

Description-comments : Shiva Stuti, Ramcharitmanas, Uttarkand, Doha 107

Latest update : February 21, 2025

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

July 29, 2025

*sanskritdocuments.org*

# श्रीरुद्राष्टकं तुलसीदासकृतम्

नमामीशमीशाननिर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम् ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम् ॥ १॥

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशम् ।
करालं महाकालकालं कृपालं गुणागारसंसारपारं नतोऽहम् ॥ २॥

तुषाराद्रिसंकाशगौरं गभीरं मनोभूतकोटिप्रभाश्रीशरीरम् ।
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगङ्गा लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा ॥ ३॥

चलत्कुण्डलं भ्रूसुनेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम् ।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि ॥ ४॥

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशमखण्डमजं भानुकोटिप्रकाशम् ।
त्रयःशूलनिर्मूलनं शूलपाणिं भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम् ॥ ५॥

कलातीतकल्याणकल्पान्तकारी सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।
चिदानन्दसन्दोहमोहापहारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥ ६॥

न यावदुमानाथपादारविन्दं भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम् ॥ ७॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजां नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम् ।
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं प्रभो पाहि आपन्नमामीशशम्भो ॥ ८॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥

॥ इति श्रीरामचरितमानसे उत्तरकाण्डे श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतं श्रीरुद्राष्टकं सम्पूर्णम् ॥

## हिन्दी भावार्थ

हे मोक्षस्वरूप, समर्थ, व्यापक, ब्रह्म और वेदस्वरूप, ईशान दिशा के स्वामी (सर्वसम्पदा के स्वामी, जिसकी सत्ता से सबकी सत्ता हैं; ईश्वरों के ईश्वर; ब्रह्मादि के नियन्ता तथा ईशान कोण में ग्यारह रुद्ररूप से रहनेवाले ।) श्रीशिवजी ! मैं आपको नमस्कार करता हूँ । स्वतंत्र एवं स्वयं प्रकट होनेवाले, तीनों गुणों से रहित, भेदरहित (विकल्प, परिवर्तन या प्रभेदों आदि से रहित), इच्छारहित, चेतन, आकाशरूप एवं आकाश को ही वस्त्ररूप में धारण करनेवाले दिगम्बर (अथवा आकाश को भी आच्छादित करनेवाले, आकाश के समान निर्लिप्त और सबके आधारभूत) ! आपको मैं भजता हूँ ॥ १॥

निराकार, ॐकार (प्रणव) के मूल, सदा तुरीय (तीनों गुणों से अतीत) अवस्था में रहनेवाले, वाणी, ज्ञान और इन्द्रियों से परे, कैलासपति, विकराल, महाकाल के भी काल (अर्थात् महामृत्युंजय) कृपालु, गुणों के धाम, संसार से परे आप परमेश्वर को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ २॥

जो हिमालय के सदृश गौरवर्ण तथा गम्भीर हैं, जिनके शरीर में करोड़ों कामदेवों की कान्ति एवं छटा है, जिनके सिर के जटाजूट पर सुन्दर तरंगों से युक्त गंगाजी विराजमान हैं, जिनके ललाट पर द्वितीया का बाल चन्द्र और कंठ में सर्प (काल को गले का हार बनाया है । मस्तक पर द्वितीया के चन्द्रमा को धारण करना दीनवत्सलता प्रकट करता है ।) सुशोभित हैं ॥ ३॥

जिनके कानों में कुण्डल हिल रहे हैं, सुन्दर भ्रुकुटी और विशाल नेत्र हैं; जो प्रसन्नमुख, नीलकण्ठ और दयालु हैं; बाघाम्बरधारी और मुण्डमाला पहने हैं; उन सबके प्रिय और सबके स्वामी श्रीशंकरजी को मैं भजता हूँ! ॥ ४॥ (नीलकण्ठ होना ही उनके महादेव होने का प्रमाण है । इसलिए साथ ही दयालु कहा । क्रोध को जय किया है, इसलिए व्याघ्राम्बर है । विश्वरूप है इसलिए मुण्डमाल है । सब मुण्ड उन्ही के हैं । प्रिय है क्योंकि शंकर है ।)

प्रचण्ड (बल-तेज-वीर्य से युक्त), सबमें श्रेष्ठ, तेजस्वी, परमेश्वर, अखण्ड, जन्मरहित, करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाशवाले, (दैहिक, दैविक, भौतिक आदि) तीनों प्रकार के शूलों (दुःखों) को निर्मूल करनेवाले, हाथ में त्रिशूल धारण किये हुए, (भक्तों को) भाव (प्रेम) के द्वारा प्राप्त होनेवाले भवानीपति श्रीशंकरजी को मैं भजता हूँ ॥ ५॥

कलाओं से परे, (सर्वकलापूर्ण, अकल) कल्याणस्वरूप, कल्प का अन्त (प्रलय) करनेवाले, सज्जनों के सदा आनन्ददाता, त्रिपुर के शत्रु, चिदानन्दराशि, मोह के नाशक, कामदेव क शत्रु. हे प्रभो ! प्रसन्न होइए, प्रसन्न होइए ॥ ६॥

हे उमापति ! जबतक आपके चरणकमलों को (मनुष्य) नहीं भजते, तबतक उन्हें न तो इस लोक और परलोक में सुख-शान्ति मिलती है और न उनके संतापो का नाश होता है । अतः हे समस्त

जीवों के हृदय में निवास करनेवाले तथा सब प्राणियों के निवासस्थान प्रभो ! प्रसन्न होइए ॥ ७॥

न तो मैं योग जानता हूँ, न जप और न पूजा ही । हे शम्भो ! मैं आपको सदासर्वदा प्रणाम करता हूँ । हे प्रभो ! बुढ़ापा तथा जन्म (-मरण) के दुःखसमूहों से जलते हुए मुझ दुःखी की रक्षा कीजिए । हे समर्थ ! हे शम्भो ! मैं आपको नमस्कार करता हूँ ॥ ८॥

रुद्र भगवान् की स्तुति का यह अष्टक (आठ वृत्तों /श्लोकों में की हुई स्तुति) उन शंकरजी की तुष्टि (प्रसन्नता) के लिए ब्राह्मणद्वारा कहा गया । जो मनुष्य इसे भक्तिपूर्वक पढ़ते हैं, उनपर भगवान् शम्भु प्रसन्न होते हैं । (शिवजी को प्रसन्न करने के लिए यह स्तुति की गई और वे प्रसन्न भी हुए । इसलिए कहा गया कि भक्तपूर्वक इस अष्टक का पाठ करना चाहिए ।) ॥ ९॥

## English meaning

I adore You, the guardian of the north-east quarter and Ruler of the whole universe, eternal bliss personified, the omnipresent and all-pervading Brahma manifest in the form of the Vedas. I worship Lord Siva, shining in His own glory, devoid of material attributes (beyod the Gunas - Sattva, Rajas, Tamas), undifferentiated, desireless, all-pervading consciousness, having nothing to wrap about Himself except ether (or enveloping ether itself). 1

I bow to the supreme Lord, who is devoid of form, transcendent and extra-cosmic, beyond speech, understanding and sense perception, terrible yet gracious, the seed of the mystic syllable OM, the Ruler of Kailasa, the Devourer even of the great Time-Spirit and the abode of virtues. 2

Who is deeply thoughtful, and is possessed of a form white as the snowclad Himalaya, radiant with the beauty of a myriad Cupids, whose head sparkles with the lovely stream of the Ganga, whose brow is adorned by the crescent moon and neck coiled by serpents. 3

I adore the all-merciful Sankara, the universal Lord, who is loved by all, who has tremulous pendants dangling from His ear-lobes, is possessed of beautiful eyebrows and large eyes, who has a cheerful countenance and a blue speck on His throat, and who has a lion-skin wrapped round His waist and a garland of skulls round His neck. 4

I take my refuge in Bhavani′s Spouse, the supreme Lord, terrible, exalted, intrepid, indivisible, unborn and invested with the glory of a myriad suns, who roots out the threefold

agony and holds a trident in His hand and who is accessible only through love. 5

Limitless (beyond digits), ever blessed, bringing about universal destruction at the end of each round of creation, a source of perpetual delight to the virtuous, Slayer of the demon Tripura, Consciousness and Bliss personified, dispeller of delusion, be propitious, my lord, be propitious, O Destroyer of Cupid. 6

So long as they worship not the lotus-feet of Uma's lord, there is no happiness nor peace nor cessation of suffering for men either in this world or in the next. Therefore, be propitious, my lord, dwelling as You do in the heart of all living beings. 7

I know not Yoga (concentration), nor Japa (the muttering of prayers) nor ritual. I simply bow to you at all times and at every moment, O Sambhu! Pray, protect me, my lord, miserable and afflicted by sufferings attendant on old age and birth (and death) as I am, O Lord Sambhu! 8

This hymn of eight verses was uttered by the Brahmana in order to propitiate Lord Siva. Sri Sambhu is pleased with those men who devoutly recite it. (9)

The Rudrashtakam composed by Tulasidasji in Ramacharitamanas has some words likely to be influenced by Hindi construction. They have to be considered as what is known as ArShaprayogAH (common term for linguistic usages in Sanskrit, which although not correct as per grammatical rules are still exempted and deemed valid on account of their having been used by some ancient sages carrying the rich linguistic and artistic heritage.) Some examples are
शम्भु in सम्बोधनं instead of शम्भो ।
बालेन्दु without विसर्गः ।
भुजङ्गा in स्त्रीलिङ्गम् । mainly to match the words Ganga
हरतोषये instead of हरतोषाय ।
पुरारी instead of पुरारिः or पुरारे
मन्मथारी instead of मन्मथारिः or मन्मथारे

*Rudrashtakam by Tulasidasa)*

pdf was typeset on July 29, 2025

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*